19 जून 2000

साहित्य अकादेमी

लेखक से भेंट

चन्द्रप्रकाश देवल

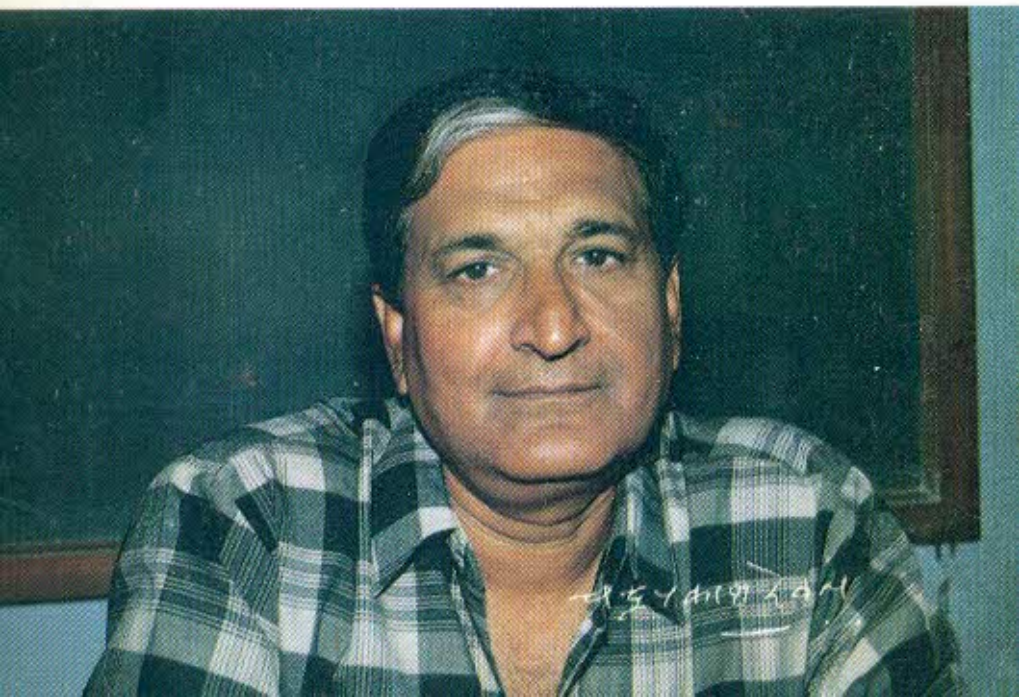

गाँव में पले-बढ़े चन्द्रप्रकाश देवल की आरम्भिक शिक्षा-दीक्षा अपने स्व. दादा भैरव सिंह दधवाड़िया के सान्निध्य में हुई। आपके दादा पुरानी राजस्थानी (डिंगल) और उसकी वाचिक परम्परा में निष्णात थे। आँख खुलते ही अपने आसपास के परिवेश में आपका साक्षात्कार हुआ- चलती चाकियों के साथ गाये जाते 'हरजस' के बोलों में दौड़ती कविता से। पर्व-अनुष्ठानों पर गाती स्त्रियों के गीतों में आवेष्टित कविता से। रावणहत्थे की स्वर लहरी और चित्रों को देखने के कौतुक के बीच भोपे द्वारा 'पड़' बाँचने के स्वरों में दुबकी कविता से। आदिवासी गवरी नृत्य में गाये जाने वाले गीतों में छिपी आदिम कविता से। 'रतजगों' 'जागरणों' में संगीत की जुगलबन्दी करती कविता से। आपके चारों ओर कविता के नानाविध रूप और छटाएँ थीं, लोक और शास्त्रीय दोनों रूपों में प्रचलित। ऐसे वातावरण में अपने गुरु के सिखाये छन्दों को कण्ठस्थ करते और उन्हें दुहराते-दुहराते देवल के चित्त में कविता का अंकुरण हुआ, पर यह अजीब था कि आपने छन्दोबद्ध कविता पर कभी क़लम नहीं चलाई।

विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान आपके भीतर घुमड़ते भावों की छुटपुट अभिव्यक्ति हुई हिन्दी में, पर विधिवत् कविता लेखन का कार्य सातवें दशक में मातृभाषा राजस्थानी के माध्यम से आरंभ हुआ। दोनों माध्यमों में अपने कवि को परखने के बाद अपने समकालीन साथी लेखकों से घंटों बहस-मुवाहिसे के बाद आपने जाना कि मातृभाषा का माध्यम ही अभिव्यक्ति को असली ताक़त देता है। अपने परवर्ती लेखकों गणेशी लाल व्यास 'उस्ताद' और विजयदान देथा के लेखन से प्रेरणा लेकर परम्परा से प्राप्त राजस्थानी भाषा को नये लेखन के अनुरूप बनाने की चुनौती के साथ, अपनी अनुभव-सिद्ध ज़िद को अंगीकार कर आपका पहला काव्य-संग्रह *पागी* आया।

राजस्थानी की नई कविता के प्रारम्भिक दौर में यह एक महत्त्वपूर्ण काव्य-संग्रह गिना गया, जिसने देवल को अपनी एक ख़ास पहचान दी। अपनी काव्यवस्तु की बहुस्तरीयता, अपने समकालीन समय की निर्मम पड़ताल करती और उसके अनुरूप अपनी काव्य-भाषा के निर्माण की योग्यता के कारण, इस संग्रह को 1979 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एक लम्बे अन्तराल के बाद 1989 में देवल का दूसरा चर्चित काव्य-संग्रह

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री के. आर. नारायणन के साथ

प्रो. के. अयप्पा पणिकर और मो. शफ़ी शौक़ के साथ

कावड़ आया, जिसका काव्यानुभव कवि की पिछली रचनाओं से अलग नहीं भी कहा जाए, तब भी वह अपेक्षाकृत शान्त पर तीखी बेधक क्षमता के कारण पाठकों के मानस में सीधा उतरने वाला माना गया। यह संग्रह राजस्थानी के प्रसिद्ध कथाकार विजयदान देथा द्वारा लिखी गई भूमिका के कारण भी चर्चित रहा। इस संग्रह की कविताओं में सत्ता, व्यवस्था और आम आदमी के त्रिस्तरीय समीकरणों के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों से अन्तर्सम्बन्धों की छानबीन और परख जैसे कवि के ख़ास हेतु बन गए, जिन्हें देवल ने अपने व्यंग्य-विधान और मर्मघाती कटाक्षों की सहायता से उजागर किया।

अपने तीसरे कविता-संग्रह *मारग* में देवल की उपस्थिति तीन स्तरों पर स्पष्ट देखी गई- कवि, चिंतक और दर्शक के रूप में। अपने रचनाकर्म में आप रचनाकार, पाठक और आलोचक की तीनों भूमिकाओं की संश्लिष्टता के सहारे अपनी खोज-यात्रा जारी रखते हैं और सामाजिक यथार्थ के सत्य को सहज उजागर करते हैं। धार्मिक वर्चस्व के आच्छन्न अधार्मिकता का प्रतिरोध करते हुए, गँवई जीवन-स्तर, लोक-संस्कृति और लोक-जीवन की कठिनाइयों की पड़ताल करती देवल की ये कविताएँ दरअसल 'बैलेंस' और 'कण्ट्रास्ट' की कविताएँ सिद्ध हुईं। इस संग्रह में एक नया प्रयोग भी था, एक ही केन्द्रीय प्रतीक 'मारग' के माध्यम से सारी बातें कही गई थीं।

देवल का कवि यहीं नहीं ठहरा। अपनी भाषा में अच्छी आलोचना की अनुपस्थिति के चलते वह अपनी ही रचनाओं का विश्लेषक बन गया। अपने बने-बनाये रचनात्मक ताने-बाने (क्लिशे) को निरन्तर तोड़ता-सँवारता रहा। *तोपनामा* नामक अगला काव्य-संग्रह इस बात का प्रमाण है। अपने शिल्प से एक और नितान्त नये शिल्प की तलाश में देवल ने अपने ही द्वारा अर्जित भाषा-मुहावरे को तोड़ा, फिर घड़ा। 1998 में *राग-विजोग* के प्रकाशन के पश्चात् पाठकों-आलोचकों ने पाया कि अब पानी थोड़ा निथरने लगा है, देवल का कवि अब अपेक्षाकृत शान्त, धीमा और सहज होकर एक साथ संयोग और वियोग को निरपेक्ष भाव से निहार सकता है। वह प्रेम की संवेदना और भावना को मनुष्य की मुक्ति-चेतना से जोड़कर देखता है। नये भाव-बोध और नये संस्कार को अपनी काव्य-भाषा में दीक्षित करने की छटपटाहट भरी चेष्टाएँ अभी भी आपकी कविताओं में स्पष्ट देखी जा सकती हैं, पर यह निर्विवाद है कि देवल अपने बिम्ब-विधान और कल्पनाशील चिंतन से अपनी कविताओं में अपना

रंग भरते हैं। इन्हीं ख़ूबियों के चलते राजस्थानी कविता को सही अर्थों में आधुनिक बनाने में चन्द्रप्रकाश देवल की सर्जनात्मक क्षमता का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इसी बीच आपका कवि-रूप हिन्दी में भी प्रकट हुआ। अपने आंतरिक कविता-संग्रह *आर्त्तनाद* के बाद आपको हिन्दी कवि के रूप में स्थापित करने वाली आपकी कृति *बोलो माधवी* 1995 में आई। *महाभारत* के उद्योगपर्व से गालव विषयक आख्यान को आपने अपने काव्य का विषय बनाया। आपके गहरे सामाजिक बोध ने इस पौराणिक स्त्री-चरित्र की त्रासद स्थितियों को समकालीन पीड़ा में रूपायित किया। आप अपनी काव्य-ऊर्जा से उन सारी विसंगतियों और विडम्बनाओं पर प्रहार करते नज़र आते हैं, जिनके रहते एक प्राणान्त मानुषी उपभोग के निर्जीव उपकरण में बदल जाती है। राजस्थान अकादमी, उदयपुर ने आपको सर्वोच्च 'मीरां पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए इस कृति के लिए कहा कि यह पौराणिक आख्यान से सनातन संदर्भ जोड़कर रचा गया नारी की अस्मिता का उत्थापक प्रबन्ध-काव्य है।

एक ही केन्द्रीय प्रतीक अथवा विषय लेकर उस पर अपनी अलग-अलग काव्यात्मक प्रतिक्रियाओं के द्वारा एक काव्य-वितान तानने में सिद्धहस्त कवि की स्मृति-चिंताएँ आपके तीसरे हिन्दी काव्य-संग्रह *स्मृति-गन्धा* में उपस्थित हैं। अपनी पिछली काव्य-कृतियों से रचना-शैली और विषय-चयन में अलग छवि रखने वाली यह कृति देवल की विशिष्ट प्रतिभा को प्रकट करने वाली सिद्ध हुई। अपने दुहराये जाने वाले कविता मुहावरे के आसरे देवल ने स्मृति के केन्द्रीय भाव को नानाविध रचनात्मक अनुभवों से समृद्ध किया है।

अवसान (1999) देवल का नया हिन्दी कविता-संग्रह है।

देवल के सृजनात्मक व्यक्तित्व की एक ख़ूबी यह भी है कि आपने भारतीय भाषाओं से अपनी भाषा में अनुवाद भी उतने ही रचनात्मक किये हैं। हिन्दी, ओड़िया, पंजाबी, गुजराती, बाङ्ला एवं संस्कृत से अब तक आपके दस अनुवाद प्रकाशित हैं। यही नहीं आधुनिक विचार और लेखन की दृष्टि से अपनी भाषा राजस्थानी को समृद्ध करने की ललक ने आपसे विश्व साहित्य की दो कालजयी कृतियों का अनुवाद भी करवाया है- एक है फ़्योदोर दोस्तायेव्स्की की प्रसिद्ध कृति *क्राइम एण्ड पनिशमेंट* और दूसरी है सेम्युअल बेकेट की नाट्यकृति *वेटिंग फ़ॉर द गोडो* जो क्रमशः *सज़ा* और *गोडो री उडीक में* नामों से प्रकाशित हैं।

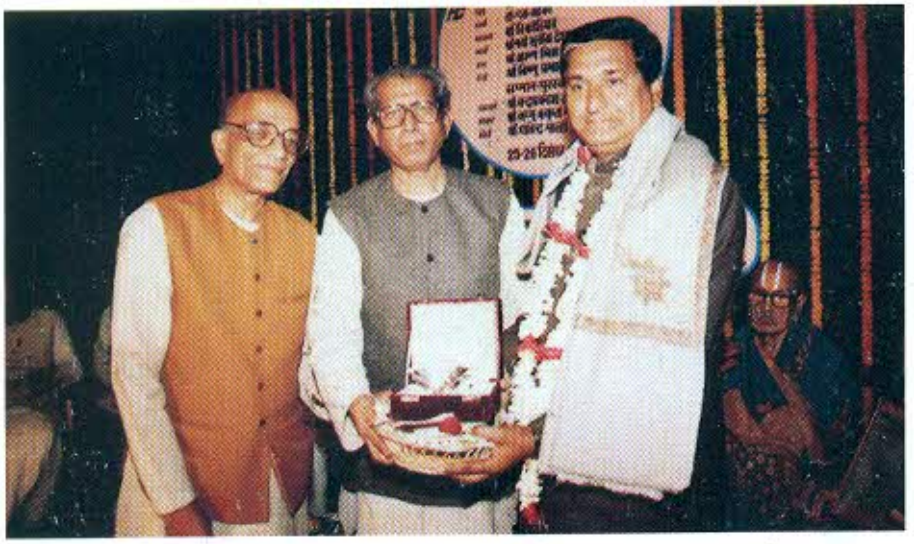

प्रो. नामवर सिंह से भारतीय भाषा परिषद् का टाँटिया पुरस्कार ग्रहण करते हुए

अनुवाद के साथ-साथ देवल ने राजस्थानी की कुछ महत्त्वपूर्ण मध्यकालीन साहित्य की कृतियों का सटीक-सम्पादन भी किया है, जिनमें उल्लेखनीय है- ईसरदास बारहट रचित *गुण हरिरस*। *भारत भासा भागवत* नामक *श्रीमद्भागवत* के राजस्थानी काव्यानुवाद के दो भाग भी आपने संपादित किये हैं।

निरन्तर अपनी भाषा और उसके साहित्य के विकास की चिंता में संलग्न और उसके प्रसार हेतु प्रयासरत चन्द्रप्रकाश देवल का नाम समकालीन भारतीय भाषाओं के उल्लेखनीय कवियों में विशिष्ट है।

मुख्य प्रकाशन

राजस्थानी काव्य-संग्रह

पागी : 1977
कावड़ : 1989
मारग : 1992
तोपनामा : 1997
राग-विजोग : 1998

हिन्दी काव्य-संग्रह

आर्त्तनाद : 1988
बोलो माधवी : 1995
स्मृति-गंधा : 1996
अवसान : 1999

अनुवाद

उपनिसदावली – सात उपनिषदों के काव्यानुवाद सहित : 1990
काळ में कुरजां – केदारनाथ सिंह के हिन्दी काव्य-संग्रह *अकाल में सारस* का : 1994
कठै ई नी वठै – अशोक वाजपेयी के हिन्दी काव्य-संग्रह *कहीं नहीं वहीं* का : 1994
जटायु – शितांशु यशश्चन्द्र के गुजराती काव्य-संग्रह *जटायु* का : 1995
स्री राधा – रमाकांत रथ के ओड़िया काव्य-संग्रह *श्री राधा* का : 1996
सबदां रौ आभौ – सीताकान्त महापात्र के ओड़िया काव्य-संग्रह *शब्देर आकाश* का : 1996
नी छीया नी तावड़ौ – हरभजन सिंह के पंजाबी काव्य-संग्रह *ना धुप्पै ना छावै* का : 1997
लाख पयांणी करूं लांबौ – सुभाष मुखोपाध्याय के बाङ्.ला काव्य-संग्रह *जत्ते दुरई जाई* का : 1997
सज़ा – फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास *क्राइम एण्ड पनिशमेंट* का : 1999
गोडो री उडीक में – सेम्युअल बेकेट के जग प्रसिद्ध नाटक *वेटिंग फ़ॉर द गोडो* का : 1999

अंग्रेज़ी

उत्तरा (राजस्थानी खण्ड) : 1992
मेडिवल इंडियन लिटरेचर (राजस्थानी खण्ड) : 1997

संपादन

निजराणौ : 1980
भारत भासा भागवत, भाग-1 1989, भाग-2 1992
गुण हरिरस : 1992

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलौत से मीरां पुरस्कार ग्रहण करते हुए

जीवन-विवरण

1949: 14 अगस्त, जन्म। राजस्थान के उदयपुर ज़िले के गोटीपा गाँव में।

1970: हिन्दी, राजस्थानी में कविता लेखन का आरंभ। मदन कँवर से विवाह।

1971: उदयपुर विश्वविद्यालय से विज्ञान संकाय में स्नातक।

1973: जोधपुर विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि।

1975: जवाहरलाल नेहरू आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के जीवरसायन विभाग में नियुक्ति।

1977: *पागी* काव्य-संग्रह प्रकाशित।

1979: *पागी* पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार।

1980: *पागी* के लिए राजस्थानी नेशनल ग्रेजुएट एसोसिएशन, मुम्बई का पुरस्कार।

1983: अजमेर में 'चारण साहित्य शोध संस्थान' की स्थापना।

1987: जीवरसायन में पी-एच. डी.

1989: *कावड़* काव्य-संग्रह प्रकाशित और उस पर 'कालूराम पेडिवाल पुरस्कार'।

1990: प्रथम अनुवाद पुस्तक-*उपनिसदावली* का प्रकाशन। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर की कार्य समिति के सदस्य। आकाशवाणी जयपुर की 'कार्यक्रम सलाहकार समिति' के सदस्य।

1992: *मारग* काव्य-संग्रह का प्रकाशन। साहित्य अकादेमी दिल्ली में राजस्थानी भाषा के परामर्श मण्डल के सदस्य।

1993: भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता का 'टाँटिया पुरस्कार'।

1995: *काळ में कुरंजा* पर साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार। हिन्दी में *बोलो माधवी* प्रकाशित।

1996: हिन्दी कविता संग्रह *स्मृति-गंधा* का प्रकाशन।

1998: साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की राजस्थानी भाषा परामर्श समिति के संयोजक। *बोलो माधवी* के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर का सर्वोच्च 'मीरां पुरस्कार'। *तोपनामा* पर मारवाड़ी सम्मेलन, मुम्बई का 'घनश्यामदास सर्राफ़ पुरस्कार'।

1999: दिल्ली की संस्था 'कथा' द्वारा 'बस में रोझ' कहानी पर रचनात्मक लेखन पुरस्कार। हिन्दी कविता-संग्रह *अवसान* का प्रकाशन।

घनश्यामदास सर्राफ़ पुरस्कार ग्रहण करते हुए